ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

प्रबुद्ध जीवन

प्रेरणास्रोतः शांतिकुंज हरिद्वार

संस्थापनाः गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा (बिहार)

सम्प्रेषक- डॉ. अरुण कुमार जायसवाल

वर्षः ०१ अंकः ०४

'भुवः'

'भुवः' अन्तरिक्ष-प्राणलोक है। यहीं से प्राणसृष्टि-प्राणवृष्टि होती है। जीवन में जीवनी-शक्ति का स्रोत यही है। इससे सम्पर्क-इसका सान्निध्य-इसकी साधना, साधक को प्राणबल से सम्पन्न-प्राणवान बनाती है। गायत्री मंत्र में इस व्यहृति की उपस्थिति इस महामंत्र को जीवनदायी-प्राणप्रदायी बनाती है। भुवः को स्वयं में समेट कर गायत्री मंत्र संजीवनी मंत्र बनता है। इसकी साधना-साधक को स्वास्थ्य का आशीष, आरोग्य का अनुदान व बलवान होने का वरदान प्रदान करती है।

'भुवः इत्यन्तरिक्षम्' यह तैत्तिरीय उपनिषद् का वचन है। ऋषि की समाधि साधना का निष्कर्ष है। भुवः में प्राण संरक्षण, प्राण परिशोधन, प्राण सम्वर्धन के सभी सत्य समाए हैं। इसकी साधना, इसके साक्षात्कार से देह-मन के सभी प्राणकेन्द्र सक्रिय, सचेष्ट व सजग हो जाते हैं। भुवः लोक ही सूर्य की ऊर्जा को धरती के योग्य बनाता है। सूर्य से आने वाली ऊर्जा से धरती के जीवन के लिए हानिकारक तत्त्वों को हटाकर केवल शुभदायक, सुखदायक ऊर्जा की सघन राशि प्रदान करता है।

भुवः से होने वाली प्राणवर्षा, जीवन के लिए जीवनीशक्ति वर्षा को स्वयं में समेटने-सहेजने का सहज उपाय, जीवनशैली-जीवन जीने की कला व कुशलता है। दिनचर्या-ऋतुचर्या, खान-पान, रहन-सहन, संग-साथ का परिष्कार करके भुवः लोक के अनुदानों से सहज अनुग्रहीत हुआ जा सकता है। गायत्री साधना को फलदायी-वरदायी बनाने का यही रहस्य है।

हृदय से हृदय तक

हृदय से उफनती संवेदना सबसे पहले माँ को खोजती है। माता के आँचल की छांव तलाशती है क्योंकि माँ से जन्म है, जीवन है। संवेदनाओं की समूची संजीवनी शक्ति हमें माँ की कोख से मिलती है। माँ के परिचय से ही हम संसार से परिचित होते हैं। माँ न होती, तो हमारा अस्तित्त्व भी न होता। मेरी माँ, आपकी माँ, फिर हमारी माताओं की माँ- यह क्रम, इसकी अनन्त कड़ियाँ! आखिर में एक सवाल आ सकता है, आखिर कोई तो है, जो सबकी माँ है। कौन है वह? जिसके स्मरण का हमें विस्मरण हो गया है। इस विस्मरण को स्मरण में बदलने, उसकी संवेदना के सूत्रों को मजबूत करने ही तो यह महापर्व आया है; जिसे हम नवरात्रि कहते हैं। जो हमें नवजीवन, नवीन चेतना से ओत-प्रोत करता है।

नवरात्रि में उनका स्मरण, नमन, वंदन, पूजन, अर्चन करने का चलन है। उन्हीं की यादों में, उनके नाम में निमग्न होने का यह सुअवसर है। उन्हीं आदिमाता का, जिनकी कोख से संसार जन्मा है, सृष्टि उत्पन्न हुई है। जिसे हम तो प्रायः भूले रहते हैं, लेकिन जो हमें कभी नहीं भूलती। जिसने हमारे लिए धरती, हवा, सूरज, चन्द्रमा सब कुछ उपहार में दे डाले हैं। चारों ओर की हरियाली, हरे-भरे फलों से लदे, अपने खिलखिलाते खिले हुए फूलों से, हँसी-खुशी की खुशबू बिखेरते पेड़-पौधे सब कुछ उसी ने तो सौंपा है। नक्षत्रों से जड़ित आकाश की चादर उढ़ा कर वही हमें सुलाती है। वही सुबह के सूरज के साथ हमें जगाती है। उसके नाम अनन्त हैं, उसके परिचय का विस्तार अनन्त है।

लेकिन हम सबको हमारे परम पूज्य गुरुदेव ने उसका परिचय गायत्री के रूप में कराया है। वह समस्त ज्ञान की माता-वेदमाता है। नीर-क्षीर का सुस्पष्ट विवेक रखने वाला शुभ्र-श्वेत हंस उसका वाहन है। स्थिर बुद्धि रखने वाले सभी सन्मार्ग-सत्पथगामियों के लिए वह वरदायिनी है। उसी का तेज सूर्य बनकर दिन में दमकता है। उसी की आभा चन्द्रमा की चांदनी बनकर रात में चमकती है। उसी के स्वागत-वन्दन में नक्षत्रों की दीपमाला सजती है। चौबीस अक्षरों, नौ शब्दों एवं तीन चरणों वाले गायत्री मंत्र- ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्' का गान करके हम उसी की महिमा गाते हैं। सूर्यमण्डल के मध्य स्थित उसी माता का ध्यान करके हम जीवनबोध पाते हैं।

नवरात्रि के नौ दिन गायत्री-मंत्र के नौ शब्दों की गूढ़ता को समझने के दिन हैं। नवरात्रि की गायत्री साधना जीवन का महोत्सव है। तो फिर देर किस बात की, विलम्ब किस बात का, प्रतीक्षा किसकी? यह महीना हम सबके लिए नवरात्रि का पुण्य पर्व लेकर आया है। यह पुण्य पर्व, प्रत्येक के लिए गायत्री साधना का पुण्य फल देने आया है। इस महासाधना से मिलने वाले पुण्य, प्राप्त होने वाली आध्यात्मिक ऊर्जा हममें से हर एक के कुयोग-दुर्योग मिटा देने में सक्षम है। बस साधना में सच्ची श्रद्धा, सम्पूर्ण समर्पण चाहिए। यदि हम गायत्री साधना करते हुए श्रद्धा, प्रज्ञा, निष्ठा की त्रिवेणी में स्नान कर सकें, तो माता की कृपा दृष्टि व कृपा वृष्टि हममें से हर एक पर अमृत अभिसिंचन किए बिना न रहेगी।

आप सभी को नवरात्रि साधना की शुभकामनाऐं।

माता की अहिर्निश स्मरण और उन्हीं के समर्पण में-

अरुण कुमार जायसवाल

FAITH

Faith is the currency with which the entire human race operates in actual actuality. The receipt of that faith is goodness and service with which we serve God. If life has to be lived with all its vagaries, wavering emotional stages, asymmetrical and illogical situations- only faith is that element that keeps the human race going. We live in a mercurial and unpredictable world. But when we believe that it is still worthwhile, and it is we; god's eldest children who have to make a meaningful existence out of this journey. We truly realize only then that there is an invisible force, an entity that makes us face these minute -to - minute challenges. Faith is the riposte.

Where does faith emerge from and what does it exactly constitute? Faith is the external universe and faith is the human soul. We are born and we die. Somewhere, we begin to know that this life span is only temporary, and we need to do our duties well and with a conscience within this given time- we develop faith in the power above. When we look up to divinity and trust it, knowing that we will be taken care of in adversities- we develop faith. And faith has the enormity and expanse of a universe. Faith cleanses and rejuvenates. When we have faith in fellow human beings, it is like an investment in God. Because then we see man in the image of God and therefore, we believe in the positivity of Nature. One of the characteristics of Nature is faith. Nature accompanies, embraces and progresses along on the basis of faith. No one is rejected and no one is given any preferential treatment in the natural world. Every flower, every insect has its designated place in the natural kingdom. All are equal because the goodness inside each element cannot be less or more. It will rain in monsoons, in winter, the air will turn cold, in summer the sun will lash out. We don't have to send a prior notice to the heavens above before any season. Nature works on the principles of faith and duty.

As human beings, one of the biggest gifts conferred to us is faith. If faith was non -existent, we would have all perished long, long back. The world rotates on that axis and never tilts even a little bit is because of faith. The mother of a newborn believes her child is going to turn out good because she has faith. Future wars will be averted because of faith and previously, the lack of faith has caused wars and massive destruction as history shows us. The deficiency of faith creates a constant state of depravity. Depravity further feeds on corruption and selfishness. Absence of faith will create suspicion and moral degradation. It will be the core of a soulless society.

Faith and its companions, Hope and Trust makes us look up at the skies and in hearts of hearts secretly know that the sun will definitely shine again tomorrow. That there will be a dawn when the darkness thins out and things can begin afresh. We are a happy, healthy and productive race when we decide to do our dharma, our duty and conduct our lives with complete conviction.

- **Dr. Avhinav Shetty Jaiswal**

गुरु अद्‌भुत चित्रकार शिष्य उनका चित्र

गुरु अद्‌भुत चित्रकार की तरह हैं जो शिष्य रूपी कोरे कागज पर अपनी अद्‌भुत कला का परिचय देकर उसे सुंदर कलाकृति के रूप में परिवर्तित कर देते हैं । संसार की सुन्दर से सुन्दर कलाकृति निर्जीव ही होती है परन्तु गुरु कलाकार की कलाकृति शिष्य एक सजीव चित्र होता है । पर इसमें शिष्य की कोई महानता नहीं, महानता तो गुरु की है वह तो मात्र एक कैनवास है । अगर उसे उत्तम गुरु का संग नहीं मिले तो वह कैनवास यूँ ही पङा-पङा कट - फट जाएगा पर वह अपने मन के उतार - चढाव से ज्यादा आगे नहीं बढ पाएगा । हाँ, अगर वह अपने मन रूपी कैनवास पर सुंदर गुणों को उकेरने की कोशिश करे और गुरु रूप चित्रकार की करुणामयी नजर उसपर पङे तो वे उसे उत्तम चित्र बना सकते हैं । ऐसे, यह अलग बात है कि एक अद्‌भुत चित्र का निर्माण भी अद्‌भुत गुरु से ही संभव है । जैसे-विश्वामित्र के चित्र राम, कृष्ण के चित्र अर्जुन, रामकृष्ण के चित्र विवेकानन्द ।

चित्र में क्या होता है चित्र चित्रकार के सामने रहता है और चित्रकार पहले उसकी कल्पना करता है, फिर उसकी रूपरेखा बनाता है, उसके बाद वह धीरे -धीरे कैनवास पर रंग भरना शुरु करता है । एक खूबसूरत, बङे चित्र को तैयार करने में चित्रकार को बहुत महीने लग जाते हैं । जबतक चित्र बोलने न लगे तबतक चित्रकार को चैन नहीं पड.ता । पर ऐसा चित्र वह चित्रकार आनन-फानन में नहीं बना डालता । इसके पीछे उसकी वर्षों की साधना होती है । तब वह अपनी मँजी हुई तूलिका से आनन-फानन में भी चित्र बनाए या कई - कई दिनों तक चित्र बनाए सब अद्‌भुत ही होता है ।

एक कहानी है पिकासो की । वे अद्‌भुत चित्रकार थे । एक बार किसी महिला ने उन्हें अपना चित्र बनाने के लिए कहा उन्होंने कहा कि अभी उनके पास समय नहीं है । तो महिला ने कहा कि मैं बहुत दूर से इसी कार्य के लिए आई हूँ । तब पिकासो ने उसपर तरस खाकर दस मिनट में उसका चित्र हूबहू बना दिया । उस महिला ने उनके मनोनूकूल धन दिया लेकिन फिर उनसे कहने लगी । मुझे आप ऐसा ही चित्र बनाना सिखा दें । मैं आपको मुँहमाँगी कीमत दूँगी तब पिकासो ने कहा कि ऐसा चित्र बनाना आसान कार्य नहीं है । उसने कहा आपने तो क्षणमात्र में इसे बना दिया । तूलिका ली, रूपरेखा बनाई, रंग डाला और बन गया चित्र । तो पिकासो ने जवाब दिया यह आपको अभी दस मिनट का काम लग रहा है परन्तु इस दस मिनट के काम के पीछे मेरी जो वर्षों की साधना है वह आपको नजर नहीं आ रही है । कारण मेरी साधना आपके लिए अप्रत्यक्ष है । पर इस प्रत्यक्ष के पीछे जो अपरोक्ष है वह ज्यादा महत्वपूर्ण है । अगर वह अपरोक्ष नहीं होता तो जो प्रत्यक्ष आप आज देख रही हैं वह अस्तित्व में ही नहीं आता । ठीक यही कहानी शिष्य के जीवन में चरितार्थ दिखती है ।

परमात्मा स्वरूप गुरु ही वे नायाब चित्रकार हैं जिनकी तूलिका के रंग कभी सूखते नहीं । बस उन चित्रकार के आगे सत्पात्र बनकर जाना पड.ता है, उनके पास बैठना पड.ता है और बिना किसी चूँ - चपड., बिना कोई हिल -डुल किए चित्र बनने के लिए संकल्परत रहना पड.ता है । तब जाकर चित्र तैयार होता है पर संसार का तो चित्र भी नश्वर, चित्रकार भी नश्वर और अपने शरीर का चित्र लेकर खुश होनेवाला भी नश्वर ही होता है पर गुरु द्वारा बनाया चित्र बिल्कुल इसके विपरीत है । वह सजीव होता है, अनश्वर होता है ।

स्वयं को अद्‌भुत चित्र के रूप में देखने के लिए उपनिषद् बनकर, शिष्य बनकर अद्‌भुत गुरु रूप अद्‌भुत चित्रकार के पास जाना होता है तभी जीवन के बोध स्वरूप अद्‌भुत चित्र मन के कैनवास पर उतरता है जो आत्मा को तो निहाल करता ही है, सम्पूर्ण परिकर भी जिससे निहाल हो जाता है और चित्र बना शिष्य कृतज्ञतापूर्वक अपने चित्रकार गुरु से भावविभोरतावश कह उठता है कि -

आपने चित्र बनाया मुझको, रंग उकेरा चुपचाप गुरुदेव
आज वही चित्र लगा बोलने, प्राण जो फूँक दिया गुरुदेव ।।
मेरा इसमें कमाल क्या, सारा कमाल किया आपने
विवेकदीप जगाकर आपने, आत्मसूरज दिखा दिया ।।

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिन्दु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- मृतक भोज, दहेज प्रथा और बलि प्रथा यह समाज का कोढ है, इस कोढ को हटाए बिना ना खुद का जीवन सुधरेगा, ना पारिवारिक जीवन सुधरेगा, ना सामाजिक जीवन सुधरेगा, ना राष्ट्रीय जीवन सुधरेगा और ना वैश्विक जीवन बदलेगा ।अच्छा संसार हम नहीं बना पाएंगे।
- आपके किए हुए कर्मों के परिणाम आपकी पीढ़ी भुगतती है।
- आज दुनिया में आदमी एक दूसरे के साथ भावनात्मक छल करता है और उस छल को अपना विजय मानता है। छल विजय नहीं वास्तविक पराजय है।
- आज समाज में कृतज्ञता नहीं दिखती, कृतघ्नता दिखती है। लेकिन प्रकृति में संतुलन का सिद्धांत है। प्रकृति को कर्म प्रिय है ।कर्म के अनुसार वह फल देती है। प्रकृति का संविधान कर्मफल विधान है।
- भगवत गीता महाभारत में है, यह बात सभी जानते हैं। भगवत गीता का अर्थ होता है भगवान का गीत। भगवत गीता ऐसा गीत है जिसे भगवान ने गया और श्री कृष्ण के माध्यम से गाया ।इसी तरह कुरान है जो मोहम्मद साहब पर इहलाम उतरा, मोहम्मद साहब ने सुना दिया। कुरान शब्द का सबसे पहले उल्लेख कुरान में ही मिलता है, जहां इसका अर्थ है उसने पढ़ा या उसने उच्चारा ।कुरान भगवान की, अल्लाह की बात है ।अल्लाह का, परमात्मा का संदेश है जो पैगंबर मोहम्मद के द्वारा उतरा।
- भगवत गीता में 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं, कुरान की 6666 आयतें है, कुछ लोगों के अनुसार 6228 है।
- जैसे भगवत गीता में परमात्मा के स्वरूप की बातें हैं, परमात्मा की प्राप्ति के तरीके भी हैं, भगवत गीता में समाज में रहने के ढंग भी हैं। इसी तरह कुरान में भी थोड़ी-थोड़ी ब्रह्म विद्या है और ज्यादा सामाजिक बातें हैं। यानी कि कुरान हदीस है, हदीस मतलब हिदायतें यानी नैतिक मार्ग का उपदेश।
- भगवत गीता कुरुक्षेत्र के मैदान में अवतरित हुई एक साथ 18 अध्याय के रूप में। जबकि कुरान 23 वर्षों तक आवश्यकता अनुसार अवतरित हुई। हजरत मोहम्मद ने ईश्वर की इच्छा से उनके आदेशों के अनुसार वह समाज बनाया जैसा अल्लाह का आदेश था।
- भगवत गीता में जिस तरह अध्याय और श्लोक होते हैं इसी तरह कुरान में अध्याय को सुरा और श्लोक को आयत कहते है।
- प्रकृति में कर्म मुख्य होता है, छल -प्रपंच नहीं होता है। धोखा दिया, तो एक दिन सामने आएगा ही आएगा। इसलिए जीवन की समस्त समस्या का समाधान है ईश्वर शरणागति।
- ऋषि लोग चित्त शुद्धि के लिए तप करते हैं, असुर लोग अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए, लोभ के लिए, लालच के लिए तप करते हैं ।इसलिए अकेला तप पर्याप्त नहीं है, तप के साथ स्वाध्याय हो, ईश्वर प्रणिधान हो यानी समर्पण हो, भक्ति हो तब तप आपको चमकदार व्यक्तित्व प्रदान करेगा।
- रावण को राम ने नहीं मारा, रावण को उसके कुकर्मों ने मार डाला।
- विचार जब अनुभव में उतरते हैं तो विचार की सार्थकता है और यही विचार क्रांति अभियान है ।विचार अनुभूति बन जानी चाहिए।
- कोई विचार कोई अध्ययन हमारे अंदर आ जाए, आप मंत्र जप कर रहे हैं, अगर वह प्रकाश आपको छू गया, तो मंत्र जप भी आपका स्वाध्याय बन सकता है ।जिस अध्ययन के प्रकाश में आप अपने स्व को पहचान लें, अपने आप को पहचान लें, जिस अध्ययन के प्रकाश में आपका स्व प्रकाशित हो जाए, वही स्वाध्याय है।
- इस धरती पर मनुष्य को कार्य करने की स्वतंत्रता है। धरती के साधनों के उपयोग की छूट है, लेकिन अगर आपने बुरा कर्म किया है तो आज नहीं तो कल आपको दंड मिलेगा।

- बार-बार कुरान आपको विचार करने की दावत देता है, धरती और आकाश के रहस्य को जानने का निमंत्रण देता है।
- मन से ही मनुष्य बना है ।वह व्यक्ति जो चिंतन करता है, सोचता है, विचारता है, जीवन के हर पहलू पर, मतलब विचारशील है, जो संवेदनशील है, वह मनुष्य है। मन के विकसित होने के कारण मनुष्य है।
- मन अगर शुद्ध भावनाओं से भरा है ,ईश्वर विश्वास पर टिका है ,तो व्यक्ति समझता है। सफलता मिल गई तो घमंडी नहीं होता और विफलता मिल गई तो हताश भी नहीं होता। ईश्वर से ,भगवान से जुड़ना ही उसके लिए सबसे बड़ा सुख है ,सबसे बड़ी उपलब्धि है।राजा बनकर भी ईश्वर की इच्छा का पालन करता है और रंक बनकर भी उनकी आज्ञा को मानता है।परमात्मा की आज्ञा के पालन में ही उसकी प्रसन्नता निहित है ऐसे व्यक्ति के लिए सांसारिक सुख अर्थहीन हो जाते हैं यदि मन में परमात्मा के प्रति प्रेम उमर रहा है तो।
- ऐसे व्यक्ति जो भक्त हैं उनके भीतर शुभ विचारों के पुष्प खिले रहते हैं। दरअसल; अपना जीवन मन की भावनाओं से संचालित होता है ।मन की सद्भावनाएं सारे दुख, अभाव, विपदाओं, विफलताओं को नकारते हुए आनंद की अवस्था का निर्माण करता है। इससे जीवन की गति भी बनी रहती है और यह सत्य है कि किसी के जीवन में सदा सुख नहीं रहता।
- हम सभी एक दूसरे की कृपा पर निर्भर हैं ।बिना कृपा के, बिना सहयोग- सहकार के यह जीवन नहीं चल सकता।
- हमने अपने जीवन का उद्देश्य क्या बना रखा है? यदि उद्देश्य बना रखा है स्वार्थ, तो जैसा उद्देश्य होगा वैसा ही सब कुछ होगा, वैसा ही जीवन होगा।
- अगर प्राचीन सभ्यता संस्कृति के अनुसार हमारा जीवन चलेगा तो कैसा होगा? संवेदना प्रधान होगा। संवेदना से ही संस्कृति बनती है।
- यह युग, यह समय आस्था संकट का समय है ।आस्था बिखरती जा रही है, हम सब की जहां-जहां आस्था है वहां वहां चोट मिल रही है।
- जिसकी जितनी समझ है उतना ही समझेगा ।समझने का तल, लेवल, चेतना का स्तर क्या है? सारी आस्थाएं आज खतरे में है ।यह एक रणनीति है ।इस कारण आज चारों तरफ घृणा का वातावरण है ।इतना व्यापक घृणा शायद पहले कभी नहीं था।
- जीवन के लिए सबसे आवश्यक क्या है? सांस, हवा। जो प्रकृति से मिलती है। दूसरी आवश्यकता है - पानी, जो प्रकृति से मिलती है।तीसरी आवश्यकता है -आहार, वह भी प्रकृति ने ही दी है। लेकिन जिस जमीन पर अनाज पैदा होता है आदमी ने व्यवस्था के नाम पर क्या किया? स्वामित्व की विभाजक रेखा खींच दी और जो उपज होता है उस संपत्ति को अपना संपत्ति समझा, उस पर व्यक्तिगत मलकियत शुरू कर दी ,यह मेरा जमीन है ,यह मेरी वस्तु है ,यह अनाज मेरा है ।जबकि किसका है ?तो प्रकृति का। आदमी की व्यवस्था ने प्रकृति की हर चीज का बंटवारा कर दिया ,धीरे-धीरे आवश्यकता गौण हो गई मालिकाना हक मजबूत हो गया ।इससे एक तरफ समाज में अभाव हुआ और दूसरी तरफ अतिभाव की विषम स्थिति पैदा हो गई। पशु लोगों के पास तो वोट देने की ताकत होती नहीं इनकी रक्षा कौन करेगा इनको आज तो हर एक जगह से बिल्कुल खदेड़ दिया है। आज की दुनिया मनुष्यवादी या पशुवादी है या फिर स्वार्थवादी या परमार्थवादी है? कार्ल मार्क्स के ढाई हजार साल पहले ही वर्धमान महावीर ने स्वामित्व पर जोरदार चोट किया था।

जिज्ञासा

प्रश्न: - मन कठोर होता है या हृदय, मन कोमल होता है या हृदय?

उत्तर: - हृदय भावनाओं से भरा होता है।भावनाएं चोटिल होती है, भावनाएं आहत होती है, और भावनाएं पुलकित होती है।अच्छी खबर आती है तो भावनाएं पुलकित हो जाती है, बुरी खबर आती है तो भावनाएं आहत हो जाती है।

बुद्धि कठोर होती है हृदय हमेशा कोमल होता है। बुद्धि वाला आदमी कठोर होता है, बुद्धि वाला आदमी होता है व्यापारी। उसको खुद से ही मतलब होता है या यूं कहें अपने मतलब से मतलब होता है।

प्रश्न: - चेतन क्या है?

उत्तर: - चेतन है होश। जहां जागृति है, जहां संवेदनशीलता है, वहां चेतन है। चेतना का गुण-धर्म क्या है? तो जागृति। जितना होश बढ़ता है उतना चेतना विकसित होती चली जाती है। जैसे कीड़े में और इंसान में क्या फर्क है, क्या अंतर है? तो इंसान में ज्यादा होश है।

प्रश्न: - कुछ ना होना क्या होता है? मतलब ध्यान में हम कुछ नहीं सोचने का प्रयास करते हैं तो हमें काला रंग या सफेद रंग दिखता है क्या यह सही है? कृपया इसे विस्तार से समझा दे!

उत्तर: - कुछ न होने के दो अर्थ है। पहले ना होने का मतलब निरर्थक होना ।दूसरा अर्थ है मैं कुछ भी नहीं, मैं तो शून्य हूं। यह आध्यात्मिक बात है लेकिन आज शून्यता आसानी से नहीं मिलती, निरर्थकता बहुत आसानी से मिल जाती है। ना करना या ना सोचना कब होता है? जब हम मन को स्थिर कर लेते हैं। यह अपने आप में महासाधना है। मन का स्थिर होना, अगर मन स्थिर हो गया तो वह अंधेरे को उजाले में बदल देती है।

प्रश्न: - ज्ञान कितने प्रकार का होता है और यह कहां से मिलता है?

उत्तर: - ज्ञान दो प्रकार का होता है परोक्ष ज्ञान, प्रत्यक्ष ज्ञान। शंकराचार्य की भाषा में परोक्ष ज्ञान और अपरोक्ष ज्ञान। अपरोक्ष ज्ञान यानि प्रत्यक्ष ज्ञान क्या है? जो आपने देखा और अनुभव किया और परोक्ष ज्ञान क्या है? जो आपने सुना और समझा।

और गहराई में जाए तो ज्ञान चार प्रकार का है- नॉलेज बाय परसेप्शन- इंद्रियों के द्वारा ज्ञान आंख से देखा, अनुभव किया। दूसरा, नॉलेज बाय इंटेलेक्चुअल एनालिसिस- बुद्धि के द्वारा जो ज्ञान अर्जित हो यह दोनों प्रत्यक्ष ज्ञान है। तीसरा, नॉलेज बाय इनट्यूशन - आपकी अंतर प्रज्ञा में जागृत ज्ञान, प्रकाशित मन से ज्ञान प्राप्त हुआ। चौथा, नॉलेज बाय आइडेंटिटी - तादात्म्य उपस्थित कर ज्ञान प्राप्त किया।

प्रश्न: - आत्मा के कुल में कौन-कौन है?

उत्तर: - आत्मा के कुलपिता, कुलपुरुष परमात्मा हैं और आत्मा का लौकिक कुल होता ही नहीं है।जब आत्मा प्रकृति से जुड़ती है तब कुल की वृद्धि होती है, तो वह आत्मा नहीं जीवात्मा कहलाती है। उसमें अंतरकरण हो जाता है और संस्कार की जो प्रारंभिक संरचना होती है उसी अनुसार उसके शरीर और परिस्थिति का निर्माण होता है और प्रकृति में जब वृद्धि होती है तो सबसे पहले क्या बनता है? चित्त यानि मन फिर पांच ज्ञानेंद्रिय, पांच कर्मेंद्रियां फिर शरीर की अन्य संरचना फिर परिस्थिति का निर्माण होता है। जब मन माया में फंसता है तो करता है मनमानी, फिर विवेक, विचार रहता नहीं है और तब आत्मा की कुल में आत्मा के राज का पतन हो जाता है।

प्रश्न: - किसी के कर्म और संस्कार जोड़ने का तात्पर्य क्या है कॉमन मैन जिसने वेदांत नहीं पढ़ा उसे कैसे समझाया जायेगा?

उत्तर: - वेदांत कर्म शास्त्र नहीं वह ज्ञान शास्त्र है। और कर्म अथवा संस्कार ज्ञान शास्त्र यानी। वेदांत में नहीं आता।ये तो योग शास्त्र का विषय है, क्योंकि वेदांत तो कर्म को मान्यता ही नहीं देता। वेदांत की नजर में कर्म, संस्कार, रिश्ता, नाता यह सब भ्रम है।वेदांत शास्त्र कहता है आप अपनी आत्मा में स्थिर हो जाइए, बात खत्म। आपको कुछ भी नहीं करना निश्चिंत हो जाइए।

पतंजलि ने एक शब्द कहा है कर्माशय। चित्त के कर्माशय में कर्म संग्रहित रहता है और कर्म कब बनता है? पहले इच्छा होती है तो विचार बनता है फिर भावना जुड़ती है हमको यह करना है फिर क्रिया होती है। इच्छा,भावना और क्रिया तब कर्म बनता है। भावना आपका राग - अनुराग या द्वेष भी हो सकता है। यह जो राग और द्वेष वाला पक्ष है न ,उसी से संस्कार का निर्माण होता है। भावना के कारण संस्कार बनता है और संस्कार वह है जो आपके संबंधों की संरचना करता है, जन्म-जन्मांतर तक जाता है। यह जो भाव होता है और यह जो कर्म होता है,घटना घट गई वह चित्त में ऊर्जा के रूप में संग्रहित होता है, ऊर्जा बीज बन जाती है कर्माशय में ऊर्जा बीज बनकर रहती है, इसका परिपाक होता है, काल के गर्भ में, फिर वही प्रारब्ध बनता है, फिर आपका नया जीवन बनता है। यह ऐसे ही चलता रहता है, छुटकारा नहीं मिलता। इससे बचने का एक ही उपाय है आप अपनी भावनाओं को परमात्मा में स्थिर कर दीजिए। परमात्मा से तादात्म्य करिए, संसार से तादात्म्यविसर्जन करिए और जो कुछ है उसे शांतभाव से, धैर्यपूर्वक सहन करिए । यानि राग और द्वेष दोनों से बाहर निकल जाइए।

सितम्बर माह की गतिविधियाँ

प्रतिदिन सदर अस्पताल सहरसा में 1:00 बजे से 2:00 बजे के बीच गायत्री परिवार, सहरसा के द्वारा जरूरतमंदों के बीच भोजन प्रसाद वितरण करते हुए

दिनांक 03/09/2023, व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को सम्बोधित करते हुए डा0 अरूण कुमार जायसवाल ने कहा- जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान ईश्वर शरणागति है। अकेला तप स्वाध्याय पर्याप्त नहीं है। चित्त को निर्मल करने के लिए ईश्वर भक्ति के साथ-साथ धैर्य से प्रार्थना एवं ध्यान करना चाहिए। उन्होंने कहा आज समाज को क्रूर प्रथा- दहेजप्रथा, पशु-बली एवं मृतक भोज कमजोर एवं निष्ठुर कर रही है ।

3 सितंबर को सहरसा उपजोन के पाँचों जिले सहरसा, खगड़िया, सुपौल, मधेपुरा, एवं बेगुसराय के संगठन की वार्षिक बैठक संपन्न हुई, जिसका शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ जिसमें सभी जिले के जिला संयोजक, युवा संयोजक, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा जिला संयोजक अपने-अपने जिले में पिछले 1 वर्ष में किए गए कार्य का प्रतिवेदन समर्पित किया, साथ ही अगले 1 वर्ष की कार्य योजना बनाई गई।

निम्न कार्य के लिए निर्णय लिया गया: -

1) सुदूर गांवों में मिशन के विचार को पहुंचाना।
2) अखंड ज्योति पाठक की संख्या बढ़ाना।
3) गायत्री यज्ञ एवम देव स्थापना अधिक से अधिक घरों में कराना।
4) भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में इस वर्ष अधिक से अधिक बच्चों को शामिल कराना।
5) वर्ष में 2 बार नौ दिवसीय संजीवनी साधना हेतु उपजोन स्तर पर एक साथ परिजनों को शांतिकुंज भेजना।
6) युवाओं को मिशन से जोड़ने हेतु प्रत्येक जिले में Youth Expo आयोजित करना।

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में आयोजित उपजोन की वार्षिक बैठक में सहरसा उपजोन के अंतर्गत आने वाले पांचों जिले सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया एवम बेगुसराय के परिजनों को संबोधित करते उपजोन समन्वयक डॉक्टर अरुण कुमार जयसवाल

जिला संयोजक सहरसा - ललन कुमार सिंह

जिला संयोजक मधेपुरा - अयोध्या शरण यादव

जिला संयोजक सुपौल - डॉक्टर अजीत कुमार सिंह

मुख्य ट्रस्टी खगड़िया - डॉक्टर विजेंद्र कुमार

जिला संयोजक बेगुसराय - शैलेंद्र कुमार

जिला युवा सह संयोजक सहरसा - चंदन कुमार

जिला संयोजक खगड़िया - अरविंद कुमार हिमांशु

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा जिला संयोजक, सुपौल - जयप्रकाश कुमार

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा जिला संयोजक मधेपुरा - सुजीत कुमार

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा जिला संयोजक - दिनेश कुमार दिनकर

जिला युवा संयोजक बेगुसराय - सत्यप्रकाश कुमार

जिला युवा संयोजक मधेपुरा - आनंद कुमार

जिला युवा संयोजक सुपौल - प्रमोद कुमार

कृष्ण जन्माष्टमी कार्यक्रम में नाल बजाते शंकर जी और संगीत गाते हुए ब्रजेश जी

कृष्ण जन्माष्टमी कार्यक्रम में भाग लेते गायत्री परिजन

दिनांक 10/09/23 सत्र को संबोधित करते हुए डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि भगवत गीता में कहीं कृष्णवाच नहीं है श्री भगवान उवाच है, भगवान का गाया गीत है। भगवान का संदेश कृष्ण के माध्यम से भगवत गीता में अवतरित हुआ, उसी तरह अल्लाह का पैगाम हजरत मुहम्मद के माध्यम से उस जाहिल्यिा युग में कुरान में अवतरित हुआ। साथ ही कार्यक्रम में मॉरीशस से आए हुए विदेशी दंपति ने भी भाग लिया।

दिनांक 06/09/23 दिन बुधवार को गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर डा0 अरुण कुमार जायसवाल जी ने कहा- जन्माष्टमी का दिन बहुत ही पवित्र पावन है। आज ही के दिन भगवान कृष्ण धरती पर आए थे । भारतीय संस्कृति में चार रात्रि महत्वपूर्ण होती है। जन्माष्टमी की रात्रि को मोहरात्रि भी कहा जाता है।

इयाज़ हुसैन कीनू (मॉरीशस से), उन्होंने कहा चार पीढी पहले बिहार से मॉरीशस गये। आज मै यहाँ अपनी मातृभूमि मे खड़ा हूँ। बहुत अच्छा लग रहा यहाँ आकर।

नौशीन हुसैन कीनू (मॉरीशस से), उन्होंने कहा अपनी चाहत को पूरी करने के लिए माँ बाप को कभी नही छोड़ना चाहिए।

दिनांक 05/09/23 शिक्षक दिवस के शुभ अवसर पर गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान के शिक्षक गण ने अपने छात्रों से बताया कि छात्र को अपने जीवन के जिस भी क्षेत्र में काम करे तो वह इस बात का ध्यान रखें कि उस क्षेत्र में कला और कुशलता का विकास करना है। कला और कुशलता के विकास करने से आपका जीवन सौंदर्य और प्रसन्नता से भर जाएगा। Teacher का मतलब है कि उसे हर दिन हर रोज पढ़ना ही है और पढ़ना ही चाहिए अगर नहीं पढ़ रहे हैं तो वह शिक्षक नहीं है। टीचर अपने जीवन में अध्ययन तो करते ही हैं लेकिन अध्ययन किए गए चीजों का पुनः स्वाध्याय करते हैं। अध्ययन करना और स्वाध्याय करना दोनों सर्वथा अलग बात है छात्र अध्ययन करते हैं लेकिन शिक्षक स्वाध्याय करते हैं। जिस रोज छात्र स्वाध्याय करना प्रारंभ कर देंगे। उस रोज वह छात्र भी शिक्षक बन जाएगा।

गायत्री कंप्यूटर शिक्षण संस्थान में नये सत्र मे एडमिशन जारी है।

दिनांक 24/09/2023 को सहरसा जिला के कहरा प्रखंड अंतर्गत न्यू कॉलोनी में प्रत्येक महीना के अंतिम रविवार की तरह गायत्री परिवार, सहरसा के द्वारा 24 अलग- अलग घरों में गायत्री यज्ञ, देव स्थापना कार्यक्रम संपन्न कराया गया।

यज्ञ के पश्चात पूजन एवम संकल्प करा कर पौधा रोपण कराते हुए परिजन

बैजनाथपुर तीरी स्थित नवनिर्मित GR Rice Mill का उद्घाटन गायत्री यज्ञ कर किया गया

दिनांक 19/09/2023 बैजनाथपुर तीरी स्थित नवनिर्मित GR Rice Mill के उद्घाटन में डॉ अरुण कुमार जैसवाल (ट्रस्टी गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा) एवम पूर्व सांसद आनंद मोहन

दिनांक 19/09/2023 बैजनाथपुर तीरी स्थित नवनिर्मित GR Rice Mill के उद्घाटन में शामिल डॉ अरुण कुमार जैसवाल (ट्रस्टी गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा), मनोज कुमार (कमिश्नर सहरसा, पूर्णिया), मनोज कुमार (विशेष सचिव, पटना), वैभव चौधरी DM सहरसा, उपेंद्रनाथ वर्मा SP सहरसा, एवम पूर्व सांसद आनंद मोहन

पटना अश्वमेघ यज्ञ के रजत जयंती समारोह के उपलक्ष्य में गायत्री शक्तिपीठ, पटना में आयोजित राज्यस्तरीय बैठक में सहरसा उपजोन अंतर्गत आने वाले पांचों जिला सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, बेगुसराय सहित बिहार राज्य के 38 जिले के परिजन शामिल हुए, बैठक को संबोधित करते सहरसा उपजोन समन्वयक डॉ अरुण कुमार जयसवाल

गायत्री शक्तिपीठ पटना में, पटना अश्वमेघ यज्ञ के रजत जयंती समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित राज्यस्तरीय बैठक

गायत्री शक्तिपीठ के यज्ञशाला परिसर में अनन्त पूजा (28/09/2023) में सम्मिलित श्रद्धालुगण

दैनिक समाचार पत्रो में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

दहेज जैसी क्रूर प्रथा के दुष्परिणाम पर हुई चर्चा

रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में बैठक में मौजूद युवा। • हिन्दुस्तान

सहरसा। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्रको सम्बोधित करते हुए डा. अरूण कुमार जायसवाल ने कहा जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान ईश्वर शरणगती है। अकेला तप स्वाध्याय पर्याप्त नहीं है।

उन्होंने कहा आज समाज को क्रूर प्रथा जैसे दहेज, पशु-बली एवं मृतक भोज कमजोर एवं निष्ठुर कर रही है। लोगों को क्रूर प्रथा के दुष्परिणामों पर विचार करना चाहिए। सत्र के दूसरे चरण में सहरसा उपजोन के पांचों जिले सहरसा, खगड़िया, सुपौल, मधेपुरा, एवं बेगुसराय की संगठन की बैठक हुई। जिसमें सभी जिलों के जिला संयोजक अपने-अपने जिलों का प्रतिवेदन दिये।

मारिशस से पहुंचे मुस्लिम दंपती ने किया रुद्राभिषेक

संवाद सूत्र, सहरसा : रविवार को शहर के गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित किया गया। मारीशस से आए मुस्लिम दंपती ने गायत्री शक्तिपीठ में पूजा-अर्चना कर रुद्राभिषेक व हवन किया। पिछले दो दिनों में गायत्री शक्तिपीठ में प्रज्ञेश्वर महादेव का दुग्धाभिषेक कर उन्होंने विश्व के लोगों के सुख-समृद्धि की कामना की। रविवार सुबह गायत्री शक्तिपीठ में उन्होंने हवन भी किया।

मारीशस से आए व्यवसायी इंयाज हुसैन किनो एवं उनकी पत्नी नवसीन हुसैन किनो ने सत्र में कहा कि यहां का वातावरण उन्हें काफी दिव्य लगा है। यहां उन्हें सकारात्मक ऊर्जा मिली। गान, ज्ञान और ध्यान के कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक उन्होंने भाग लिया। उन्होंने बताया कि चार पीढ़ी पूर्व उनके पूर्वज मारीशस गए आज वे अपनी मातृभूमि पर खड़े हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया में एक ही धर्म है और वह है इंसानियत का। शिक्षा और ईमान पर ध्यान रखें, आप सफल हो जाएंगे। नवसीन ने कहा कि यहां आकर वे काफी खुश हैं। भगवान के बाद अपने माता-पिता का सम्मान करना चाहिए। किसी लड़की या लड़के के लिए माता-पिता को छोड़ना अनुचित है। गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि भगवत गीता भगवान का गाया गीत है।

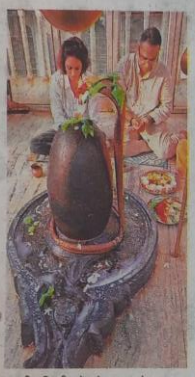

भगवान का संदेश कृष्ण के माध्यम से भगवत गीता में अवतरित हुआ। लगभग सभी धर्मग्रंथों में कहा गया है कि ईश्वर एक है। हमें सभी धर्मग्रंथों के प्रति सम्मान एवं सौहार्द विकसित करना चाहिए। जहां से शिक्षा अच्छा मिले, लेनी चाहिए। जैसे खजूर मुसलमान भाई को प्रिय है ,उसी प्रकार नारियल हिन्दू भाई को। लेकिन दोनों फल मानवता के लिए हैं। उसका आनंद लेना चा

गायत्री शक्तिपीठ में प्रज्ञेश्वर महादेव का रुद्राभिषेक करते मारिशश से पहुंचे मुस्लिम व्यवसाई दंपति • जागरण

गायत्री मंदिर में आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में मौजूद युवा। • हिन्दुस्तान

व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित

सहरसा। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा- भगवत गीता भगवान का गाया गीत है। भगवान का संदेश कृष्ण के माध्यम से भगवत गीता में अवतरित हुआ। उसी तरह अल्लाह का पैगाम हजरत मुहम्मद के माध्यम से उस जाहिल्यिया युग में कुरान में अवतरित हुआ। लगगग सभी धर्म ग्रन्थों में कहा गया ईश्वर एक है। हमें सभी धर्मग्रन्थों के प्रति सम्मान एवं सौहार्द, विकसित करनी चाहिए। मारीशस से आए व्यापारी इंयाज हुसैन किनो एवं उनकी पत्नी नवसीन हुसैन किनो ने कहा यहां का वातावरण दिव्य है। यहां हमें पोजिटीव इनर्जी की प्राप्ति हुई। उन्होंने कहा चार पीढ़ी पहले हमारे पूर्वज मोरीसस गए थे आज मै अपने मातृभूमि की जमीन पर खड़ा होकर बोल रहा हूं।

हमें सभी धर्मग्रंथों के प्रति करना चाहिए सम्मान व सौहार्द विकसित

प्रतिनिधि, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया. सत्र को संबोधित करते हुए डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि भगवत

गीता में कहीं कृष्णवाच नहीं है. भगवान का गाया गीत है. भगवान का संदेश कृष्ण के माध्यम से भगवत गीता में अवतरित हुआ. उसी तरह अल्लाह का पैगाम हजरत मुहम्मद के माध्यम से उस जाहिल्यिया युग में कुरान में अवतरित हुआ. हजरत मुहम्मद ने जाहिल्या युग खत्म करके एक अच्छे समाज का निर्माण किया. कुरान के माध्यम से एक क्रांति हुई. कुरान अल्लाह की पुस्तक है. लगभग सभी धर्म ग्रंथों में कहा गया ईश्वर एक है. हमें सभी धर्मग्रंथों के प्रति सम्मान एवं सौहार्द विकसित करनी चाहिए. गीता हो या कुरान दोनों मानव कल्याण की बात करता है. जहां से शिक्षा अच्छा मिले, लेनी चाहिए. जैसे खजूर मूसलमान भाई को प्रिय है. उसी प्रकार नारियल हिन्दू भाई को. लेकिन दोनों फल मानवता के लिए है. उसका आनंद लेना चाहिए. इस अवसर पर इंयाज हुसैन किनो एवं उनकी पत्नी नवसीन हुसैन किनो मारीशस के व्यवसायी एँडा अरुण कुमार जायसवाल से मिलने आये. दो दिनों तक शक्तिपीठ में रूके. उन्होंने कहा कि यहां का वातावरण दिव्य है. यहां हमें पॉजिटीव इनर्जी की प्राप्ति हुई एवं गान, ज्ञान एवं ध्यान के कार्यक्रम में बड़े उत्साह पूर्वक भाग लिया. उन्होंने कहा कि चार पीढ़ी पहले उनके पूर्वज मॉरीशस गये थे. आज वे अपने मातृभूमि की जमीन पर खड़ा होकर बोल रहे हैं. उन्होंने कहा कि दुनिया में एक ही मजहब है वह है इंसानियत का. शिक्षा एवं ईमान पर ध्यान रखने पर सफल हो होंगे. इस अवसर पर उनकी पत्नी नवसीन ने कहा कि वह यहां आकर खुश हैं. भगवान के बाद अपने माता पिता का सम्मान करना चाहिये. माता पिता सबसे उपर हैं. किसी लड़की या लड़के के लिए माता पिता को छोड़ना अनुचित है.

दुनिया में एक ही मजहब है, इंसानियत का मजहब: इंयाज हुसैन

मॉरिशस के मुस्लिम दंपती ने प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर में किया रूद्राभिषेक

दंपती बोले- यहां का वातावरण दिव्य

भास्कर न्यूज | सहरसा

स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को मॉरिशस के मुस्लिम दंपती ने रूद्राभिषेक किया। रूद्राभिषेक के बाद दंपती ने कहा यहां का वातावरण दिव्य है। हमें यहां एक सकारात्मक ऊर्जा मिली है। मॉरिशस के व्यापारी दंपती इंयाज हुसैन किनो एवं उनकी पत्नी नवसीन हुसैन किनो गायत्री शक्तिपीठ में दो दिनों तक रूके। उन्होंने शक्तिपीठ के प्रज्ञेश्वर महादेव की पूजा के साथ महामृत्युंजय जाप किया। बाद में गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को आयोजित व्यक्तित्व और परिष्कार सत्र में छात्र-छात्राओं को संबोधित किया। गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी और मुख्य कर्ताधर्ता डॉ. अरुण कुमार जायसवाल से मिलने आए दंपती ने गान, ज्ञान और ध्यान के कार्यक्रम में उत्साह के साथ भाग लिया। कहा कि चार पीढ़ी पहले हमारे पूर्वज मॉरीशस गए थे। आज मैं अपनी मातृभूमि की जमीन पर खड़ा होकर बोल रहा हूं। उन्होंने कहा दुनियां में एक ही मजहब है, वह है इंसानियत का मजहब। शिक्षा और ईमान पर ध्यान रखोगे तो आप सफल हो जाओगे।

प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर में रूद्राभिषेक करते मारीशस के दंपती इंयाज हुसैन किनो व पत्नी नवसीन हुसैन किनो।

माता-पिता सबसे ऊपर, उन्हें छोड़िए मत

पत्नी नवसीन ने कहा कि भगवान के बाद अपने माता पिता का सम्मान करना चाहिए। माता-पिता सबसे ऊपर हैं। किसी लड़की या लड़के के लिए माता-पिता को छोड़ना अनुचित है। इससे पूर्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि भगवत गीता में कहीं कृष्णउवाच नहीं है। भगवान का संदेश कृष्ण के माध्यम से भगवतगीता में अवतरित हुआ। उसी तरह अल्लाह का पैगाम हजरत मुहम्मद के माध्यम से उस जाहिल्यिया युग में कुरान में अवतरित हुआ। हजरत मुहम्मदने जाहिल्या युग खत्म करके एक अच्छे समाज का निर्माण किया। कुरान के माध्यम से एक क्रान्ति हुई। कुरान अल्लाह की पुस्तक है। सभी धर्म ग्रन्थों में कहा गया ईश्वर एक है। हमें सभी धर्म ग्रन्थों के प्रति सम्मान एवं सौहार्द, विकसित करनी चाहिए।

गायत्री मंदिर में आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में मौजूद युवा। • हिन्दुस्तान

व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित

सहरसा। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा- भगवत गीता भगवान का गाया गीत है। भगवान का संदेश कृष्ण के माध्यम से भगवत गीता में अवतरित हुआ। उसी तरह अल्लाह का पैगाम हजरत मुहम्मद के माध्यम से उस जाहिल्यिया युग में कुरान में अवतरित हुआ। लगगग सभी धर्म ग्रन्थों में कहा गया ईश्वर एक है। हमें सभी धर्मग्रन्थों के प्रति सम्मान एवं सौहार्द, विकसित करनी चाहिए। मारीशस से आए व्यापारी इंयाज हुसैन किनो एवं उनकी पत्नी नवसीन हुसैन किनो ने कहा यहां का वातावरण दिव्य है। यहां हमें पोजिटीव इनर्जी की प्राप्ति हुई। उन्होंने कहा चार पीढ़ी पहले हमारे पूर्वज मोरीसस गए थे आज मै अपने मातृभूमि की जमीन पर खड़ा होकर बोल रहा हूं।

सभी समस्याओं का समाधान है ईश्वर का भजन

संस, सहरसा: रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व पर परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डा. अरूण कुमार जायसवाल ने कहा कि जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान ईश्वर शरणागति है। अकेला तप स्वाध्याय पर्याप्त नहीं है। चित्त को निर्मल करने के लिए ईश्वर भक्ति के साथ-साथ धैर्य से प्रार्थना एवं ध्यान करना चाहिए। उन्होंने कहा आज समाज को क्रूर प्रथा (दहेजप्रथा) पशु-बलि एवं मृतक भोज कमजोर एवं निष्ठुर कर रही है। आज दहेज की निर्मम मांगें छाती चीर रही है। क्रूर प्रथा के दुष्परिणामों पर विचार करना चाहिए एवं विवेक का आश्रय लेना चाहिए। उन्होंने ने कहा कि आज आदमी एक दूसरे के साथ भावनात्मक छल करता है। एवं इसे अपना विजय मानता है। प्रकृति में संतुलन का सिद्धांत है। सत्र के दूसरे चरण में सहरसा उपजोन के पांचों जिला सहरसा, खगड़िया, सुपौल, मधेपुरा, एवं बेगुसराय की संगठनात्मक बैठक हुई। बैठक में गांवों की ओर मिशन के विचार को पहुंचाने, अखंड ज्योति पाठक की संख्या बढ़ाने, अधिक- से- अधिक घरों में गायत्री यज्ञ कराने आदि पर विचार किया गया।

संबोधित करते ट्रस्टी ● जागरण

भाप स्नान

भाप स्नान कई तरह से फायदे पहुंचाती है, जिनमें से कुछ लाभों से हम परिचित हैं और कुछ से अनजान। वास्तव में, यह कई तरह से स्वास्थ्य लाभ प्रदान कर सकता है, जिसमें बेहतर परिसंचरण को बढ़ावा देना, तनाव में कमी और त्वचा को साफ करना और बीमारियों से बचाव शामिल है। स्टीम से लोग स्नान करते हैं, यानी की पूरे शरीर की भाप से सिकाई होती है। इसी कारण इसे स्टीम बाथ कहते हैं।

स्टीम बाथ के फायदे:

1. यह स्वस्थ श्वास को बढ़ावा देता है और नाक के मार्ग को खोलता है। यह श्वसन संबंधी लक्षणों से अस्थायी राहत प्रदान कर सकता है।

2. यह त्वचा को साफ करता है। भाप रोमछिद्रों को खोलकर शुष्क त्वचा को हाइड्रेट करती है। इस वजह से स्टीम बाथ त्वचा को स्वस्थ चमक प्रदान करता है।

3. स्टीम बाथ ब्लड सर्कुलेशन को बढ़ावा देता है और मेटाबॉलिज्म को बूस्ट कर सकता है। यह तनाव दूर करने में मदद करके आरामदायक नींद को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है।

माह सितम्बर में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) में भाग लिया -

- इयाज़ हुसैन कीनू (मॉरीशस): बिहार आकर गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के दर्शन एवं डॉ० अरुण कुमार जायसवाल जी से मिलने आए और यहां आकर व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा को संबोधित किया।

- नौशीन हुसैन कीनू (मॉरीशस): बिहार आकर गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के दर्शन एवं डॉ० अरुण कुमार जायसवाल जी से मिलने आए और यहां आकर व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा को संबोधित किया।

आगामी कार्यक्रम

14 अक्टूबर को सामूहिक श्राद्ध तर्पण

15 अक्तूबर नवरात्रि साधना के लिए कलश स्थापना एवं सामूहिक संकल्प

23 अक्तूबर पूर्णाहुति एवं अमृतासन (खिचड़ी प्रसाद) वितरण

आईए गुरुवर! आईए

आईए गुरुवर आईए, हम सब को राह दिखाईए
काँटों भरे रास्ते पर, देकर संबल चलाइए ।। आईए गुरुवर आईए -----
प्रात को ही पास पाया, आपका जब साथ पाया
आपको वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ कह, गायत्री परिकर मुस्काया ।
आदिशक्ति के, भक्त अनादि, हमारे गुरुवर पंडित श्रीराम
आपके चरणों में नत हम सारे, हमको शरण में लीजिए ।। आईए गुरुवर! आईए
वेदों के अनादि गायक, पुराणों के हैं उद्धारक
महाकाल कहलाने लायक, करूणा कृपा के हैं दायक ।
सतयुग स्वप्न के उद्गायक, इस सदी के महानायक
अखण्ड ज्योति के प्रकाश से, जग को स्नात् कर जाईए ।। आईए गुरुवर! आईए
ज्ञान की गँगा बहाई, दिव्य जो लेखनी चलाई
दिखने लगा पन्थ प्रशस्त, सजने लगे ग्रन्थ अनन्त ।
अर्हन्त और निर्ग्रन्थ हमारे, मुक्तिदाता आप हैं
आपकी पुकार उठी है, हमें गले लगाईए ।। आईए गुरुवर! आईए
विचार क्रान्ति अभियान से, अज्ञान भी लगा थरथराने
चेतना सबकी जगी जो, आत्मा लगी गुनगुनाने ।
शर-सन्धान करने चली वह, लगी मर्म सबका बींधने
कारण उसके आप गुरूवर, देखिए प्रभु देखिए ।। आईए गुरुवर! आईए
सप्त सुरों में सजकर भारती, सप्त अश्वों पर आरूढ हुई
ज्ञान-सूर्य के साथ उषा भी, विवेक-चक्षु खोल चली ।
अब अधर्म विवश रोने को, कुरूक्षेत्र है सज गया
हम आपके अर्जुन गुरूवर, आप सारथि बन जाईए ।। आईए गुरुवर! आईए
देवासुर संग्राम के नायक, नायिका आपकी भगवती
मचल रहे हैं प्राण हमारे, सेनानी हम आपके ।
दिख रहा दानव चहुँ दिश, नेत्र तृतीय खोलिए
कुपथ पर पग रखे मानव में, अन्तर्दीप जगाइए ।। आईए गुरुवर! आईए
क्या हुआ हम पाँच ही, पर पंच पाण्डव कहलाते हम हैं
कौरवों से युद्ध हेतु, विजय की शक्ति पाते हम हैं ।
क्या रूद्र क्या रूद्राणी, हर रूप आपमें देखते हम हैं
हे निर्माता आईए, युग निर्माण कर जाईए ।। आईए गुरुवर! आईए

– डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है- मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे- यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार	:	**गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)**
संपर्क सूत्र	:	**06478-228787, 9470454241**
Email	:	**gspsaharsa@gmail.com**
Website	:	**https://gsps.co.in/**
Social Connect	:	**https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA** **https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39** **https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en** **https://www.kooapp.com/profile/gayatri7AJ0S6** **https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en** **https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/**